SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

औद्योगिक सम्बंधो का औद्योगिक श्रमिको पर प्रभाव – एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (भावनगर जिलें के सन्दर्भ में)

राजुभाई एम. डोडिया, शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग,
महाराजा कृष्णकुमारसिंहजी भावनगर विश्वविद्यालय, भावनगर, गुजरात, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author

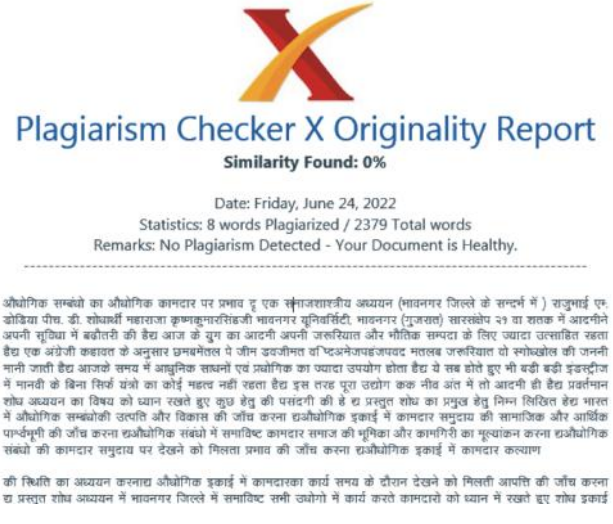

राजुभाई एम. डोडिया, शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, महाराजा कृष्णकुमारसिंहजी भावनगर विश्वविद्यालय, भावनगर, गुजरात, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 23/06/2022
Revised on : -----
Accepted on : 30/06/2022
Plagiarism : 00% on 24/06/2022

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 0%
Date: Friday, June 24, 2022
Statistics: 8 words Plagiarized / 2379 Total words
Remarks: No Plagiarism Detected - Your Document is Healthy.

शोध सार

२१वे शतक में आदमी ने अपनी सुविधा में बढौतरी की है। आज के युग का आदमी अपनी आवश्यकता और भौतिक सम्पदा के लिए ज्यादा उत्साहित रहता है। एक अंग्रेजी कहावत के अनुसार Necessary is the Mother of Investigation मतलब आवश्यकता को शोध की जननी मानी जाती है। आज के समय में आधुनिक साधनों एवं प्रौद्योगिकी का ज्यादा उपयोग होता है। ये सब होते हुए भी बड़ी–बड़ी इंडस्ट्रीज में मानव के बिना सिर्फ यंत्रो का कोई महत्व नहीं रहता है। इस तरह पूरा उद्योग की नीव अंत में तो मानव ही है। प्रस्तुत शोध के प्रमुख उद्देश्य भारत में औधोगिक सम्बंधो की उत्पति और विकास की जाँच करना, औद्योगिक इकाई में श्रमिक समुदाय की सामाजिक और आर्थिक पार्श्वभूमी की जाँच करना, औद्योगिक संबंधो में समाविष्ट श्रमिक समाज की भूमिका और उनकी कार्यकुशलता का मूल्यांकन करना, औद्योगिक संबंधो का श्रमिक समुदाय पर प्रभाव की जाँच करना। औद्योगिक इकाई में श्रमिक कल्याण की स्थिति का अध्ययन करना, औद्योगिक इकाई में श्रमिक के कार्य समय के दौरान देखने को मिलती आपत्ति की जाँच करना। प्रस्तुत शोध अध्ययन में भावनगर जिले में समाविष्ट सभी उद्योगो में कार्य करने वाले श्रमिको को ध्यान में रखते हुए शोध इकाई तैयार की है। शोध की समग्र समष्टि को यथायोग्य न्याय मिल पाए इसलिए उत्तरदाता की पसंदगी, समय, ज्ञान, विचार शक्ति जैसे मानदंडो को ध्यान में रखते हुए जिले के सब से बड़े औद्योगिक इकाई में से १०–१० उत्तरदाता को लेकर ३०० उत्तरदाताओं की अभ्यास इकाई बनायीं है।

मुख्य शब्द

औद्योगिक इकाई, औद्योगिक संबंध, श्रमिक.

प्रस्तावना

२१ वीं शतक में आदमी ने अपनी सुविधा में बढौतरी की है। आज के युग का आदमी अपनी आवश्यकता और भौतिक सम्पदा के लिए ज्यादा उत्साहित रहता है। एक अंग्रेजी कहावत के अनुसार Necessary is the Mother of Investigation मतलब आवश्यकता को शोध की जननी माना जाता है। आज के समय में आधुनिक साधनों एवं प्रौद्योगिकी का ज्यादा उपयोग होता है। ये सब होते हुए भी बड़ी बड़ी इंडस्ट्रीज में मानव के बिना केवल यंत्रो का कोई महत्व नहीं रहता है। इस तरह पूरे उद्योग की नीव अंत में मानव ही है। कोई भी संस्था के श्रमिको की कार्यक्षमता तब ही संभव है जब औद्योगिक इकाई का वातावरण अनुकूल हो और श्रमिको का संचालकिय संबंध मानवीय अभिगम अच्छा हो। भारत एक ऐसा देश है जहाँ औद्योगिक इकाईयों में प्राचीन काल से मानवीय संबंधो के नेतृत्व में चल रहा है। ब्रिटिश काल के दौरान औद्योगिक क्रांति और भौतिक विकास के परिणामस्वरूप आधुनिक कारखाना पद्धति के रूप में उद्योगो का विकास हुआ है। प्रवर्तमान भारतीय उद्योगो में यंत्रो का महत्व होते हुए भी मानवीय श्रम और संबंधो का महत्व देखने को मिला है। प्रस्तुत अध्ययन औद्योगिक इकाईयों मानवीय और औद्योगिक संबन्ध के ध्यान में रखते हुए किया है।

औद्योगिक संबंध

औद्योगिक संबंध का मतलब औद्योगिक इकाई में कर्मचारियों और मालिक के बीच, संचालको और यूनियन के बीच संबंध, दो शक्तिशाली समूह के बीच का संबंध होता है। सौद्योगिक संबंधो में भी श्रमिको और संचालको के बीच संबंधो अच्छे नहीं दिखते है।

श्री अग्निहोत्री के मतानुसार औद्योगिक संबंध शब्द श्रमिक एवं वही वट के बीच के संबंध स्पष्ट करता है। जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से श्रमिक और मालिक के संबंधो से उत्पन्न होते है।

बेथल एटवाटर के मतानुसार औद्योगिक संबंध आयोजन का ऐसा भाग है, जो मानव ताकत के साथ संबंधित है और वे यंत्र को चलाकर कुशल श्रमिक या आयोजक होता है।

भारत में औद्योगिक संबंध का प्रवर्तमान स्वरूप और इसमें देखने को मिलता परिवर्तन को समझने के लिए भारत में औद्योगिक संबंध के बारे में विस्तृत जानकारी एकत्रित करना अनिवार्य है। स्वतंत्रता के बाद भारत में प्रारम्भिक उद्योग के मालिक ज्यादातर सत्ताधीश और शक्तिमान होते थे, जबकि श्रमिक उनके आधिन रहते थे। देश के आर्थिक विकास को शुरु रखने के लिए और श्रमिको को रक्षण देने के ख्याल के साथ औद्योगिक संबंध में संघर्षमय स्थिति उत्पन्न होती है। वर्तमान भारत के औद्योगिक इकाई के श्रमिको और मालिक के सम्बंधो मे अनौपचारिक संबंध भी देखने को मिलते है जिनका प्रभाव श्रमिक के परिवार और श्रमिको की मानसिकता पर देखने को मिलता है। प्रस्तुत अध्ययन भावनगर जिले मे औद्योगिक इकाई में कार्यरत् श्रमिको के संबंधो का प्रभाव व उनके सामाजिक जीवन पर किया गया है।

अध्ययन का पद्धतिशास्त्र

सामाजिक विज्ञानों में अध्ययन के लिए उनका पद्धतिशास्त्र का बहुत महत्व रहता है। शोध अध्ययन को सुन्दर और स्पष्ट आयोजन की अनिवार्यता होती है। इन सन्दर्भ में शोध अध्ययन के तमाम पहलुओ की सुनिश्चित योजना बनाना जरूरी है। शोध अध्ययन के लिए आयोजन द्वारा जानकारी ज्यादा विश्वसनीय प्राप्त होती है। आयोजन के आधार पर संघर्षो और मुश्किलों का सामना करना सरल बनता है। इससे हम अध्ययन के लिए समय, ताकत और आर्थिक व्यय होने से बच सकते है।

शोध योजना और समस्या कथन

समाज के विभिन्न क्षेत्र में अपने–अपने क्षेत्र का महत्व होता है। शोधकर्ता जब शोध कार्य का प्रारंभ करता है तब अपने विषय के आधार पर शोध विषय का चयन करने के लिए कुछ बाते ध्यान में रखते है जैसे की, वर्तमान औद्योगिक इकाई में श्रमिक कल्याण को स्थान मिलता है तो वो कितनी सफल हुई है, वो बात ध्यान में रखकर प्रस्तुत

विषय चयन किया है। औद्योगिक इकाई में औपचारिक और अनौपचारिक संबंधो से उनके सामाजिक परिस्थिति में कैसा बदलाव आया है, इन बातो की पुष्टि करने के लिए प्रस्तुत विषय का चयन किया है। वर्तमान समाज में औद्योगिक संबंधो में सामाजिक पहलुओ ने उत्पादन कार्य में कितना योगदान किया यह जानकारी के लिए प्रस्तुत शोध विषय को चयनित किया है।

शोध अध्ययन का हेतु

प्रवर्तमान शोध अध्ययन का विषय को ध्यान रखते हुए कुछ हेतु प्रस्तुत शोध के प्रमुख उद्देश्य हेतु निम्नलिखित है:

१. भारत में औद्योगिक संबंधो की उत्पति और विकास की जाँच करना।
२. औद्योगिक इकाई में श्रमिक समुदाय की सामाजिक और आर्थिक पार्श्वभूमि की जाँच करना।
३. औद्योगिक संबंधो में समाविष्ट श्रमिक समाज की भूमिका और कार्यकुशलता का मूल्यांकन करना।
४. औद्योगिक संबंधो का श्रमिक समुदाय पर प्रभाव की जाँच करना।
५. औद्योगिक इकाई में श्रमिक कल्याण की स्थिति का अध्ययन करना।
६. औद्योगिक इकाई में श्रमिक के कार्य समय के दौरान देखने को मिलती आपत्ति की जाँच करना।

उपरोक्त उद्देश्य की जाँच करने के लिए प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक और द्वितीयक समंको का उपयोग किया है। शोध अध्ययन क्षेत्र का भौगोलोक और ऐतिहासिक प्रारूप के लिए भी द्वितीयक स्त्रोत का आधार लिया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्राथमिक समंक को एकत्रित करने के लिए प्रश्नावली का उपयोग किया है, जिनमे दो भाग है, पहले भाग मे उत्तरदाता की प्राथमिक जानकारी जैसे की नाम, जाति, लैगिक स्थति, वैवाहिक स्थिति, परिवार का स्वरूप आदि पहलुओं का समावेश किया है और दूसरे भाग में औद्योगिक संबंध, उद्योग में कार्य स्थिती, समस्या, मालिक मैनेजर और साथी श्रमिको के साथ संबंध, सामाजिक परिवर्तन, कल्याण कार्यक्रम और श्रमिक संगठन की जानकारी को लिया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में भावनगर जिले में समाविष्ट सभी उद्योगो में कार्य करते श्रमिको को ध्यान में रखते हुए शोध इकाई तैयार की है। शोध की समग्र समष्टि को यथायोग्य न्याय मिल पाए इसलिए उत्तरदाता की पसंदगी, समय ज्ञान, विचारशक्ति जैसे मानदंडो को ध्यान में रखते हुए जिले के सब से बड़े औद्योगिक इकाई में से १०–१० उत्तरदाता को लेकर ३०० उत्तरदाताओं की अभ्यास इकाई बनायीं है।

उत्तरदाता की सामाजिक परिस्थिति

सामाजिक विज्ञानों में किये जाने वाले शोध अध्ययन में सामाजिक परिस्थिति का महत्व ज्यादा रहता है, क्योकि सामाजिक विज्ञान में अभ्यास के केंद्र में समाज का सदस्य मनुष्य का समाविष्ट होता है। प्रस्तुत अध्ययन में उत्तरदाताओ की सामाजिक परिस्थिती का चित्र स्पष्ट करने का प्रयास किया है जिसमे उत्तरदाता की आयु की जाँच की गई है, तो पता चला है कि प्रस्तुत अध्ययन में १८ से ४० की आयु वाले सब से ज्यादा ८६ प्रतिशत है। प्रस्तुत अध्ययन में ८० प्रतिशत पुरुष उत्तरदाता है। उत्तरदाताओ के धर्म की जाँच करने पर पता चला है कि, ८६ प्रतिशत हिन्दू धर्म को स्वीकारते है। प्रस्तुत अध्ययन में ७६ प्रतिशत उत्तरदाता वैवाहिक है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में ७२ प्रतिशत लोगो के पास रहने के लिए पक्का मकान था। परिवार के सभी सदस्यो की मासिक आय को जाँच करने पर पता चलता है कि, ५००० से १०००० आय के ८२ प्रतिशत लोग थे। ७४ प्रतिशत उत्तरदाताओ का परिवार का स्वरूप संयुक्त परिवार था। श्रमिक जिस औद्योगिक इकाई में काम करते है, उनके मालिक और अन्य पद पर स्थित लोग श्रमिको को सामाजिक सहायता करते है कि नहीं, जाँच करने पर करने पर पता चलता है कि, सभी श्रमिको को अपने उद्योग की ओर से सहायता मिलती है। उद्योग में श्रमिको को शादी पर, मृत्यु के समय पर, धार्मिक उत्सव के लिए और बीमारी के समय सहायता मिलती है। औद्योगिक इकाई में श्रम वाले काम करने पर श्रमिक अपने कार्य को साधारण और सामान्य काम मानते है। जबकि कुछ लोग निम्न स्तर का काम स्वीकारते है। उद्योग में जो श्रमिक मजदूरी का कार्य करते है उनमें ६२ प्रतिशत लोगो ने अपनी इच्छा से पसंद किया है क्योकि उनके पास

शिक्षा का स्तर नहीं था, आर्थिक स्थिति निम्न होने पर और मजदूरी के सिवा कुछ काम नहीं आता है।

श्रमिको के कार्य परिस्थिति और समस्या

श्रमिक औद्योगिक इकाई में जो श्रम करता है वहाँ की स्थिति, वेतन और उद्योग का वातावरण को ध्यान में रखकर श्रमिको की कार्य करने की स्थिति और समस्या सम्बन्धी जानकारी के आधार पर देखने को मिलता है कि, प्रस्तुत अध्ययन में ४४ प्रतिशत श्रमिको का शोषण होता है। उद्योग में जो शोषण होता है वो ज्यादातर से मालिक और ठेकेदार से होता है जिनमे श्रमिक का वेतन कम करना, कार्य का दिनो में कमी करना और काम के घंटो और वेतन में गड़बड़ी करना आदि स्वरूप से शोषण होता था। उद्योग एक ऐसी जगह है जहाँ व्यक्ति परिश्रम करता है। कई श्रमिको को काम के दौरान स्वास्थ्य पर नुकसान हुआ है, इनमे सब से ज्यादा उनके हाथ–पैरो को नुकसान हुआ है और उद्योग में काम के बाद सामान्य बीमारी रहती है। उद्योग में काम के दौरान मालिक से पास से ८४ प्रतिशत लोगो को सहायता मिली है।

श्रमिक योजना, श्रमिक महासंघ और कानून

औद्योगिक इकाई में कार्य कर रहे श्रमिको के लिए कैसी योजना है, श्रमिक संघ की भूमिका कैसी है और श्रमिको की कानून सम्बन्धी स्थिति कैसी है, इस बारे में सूचना एकत्र करने पर पता चलता है की, ८४ प्रतिशत श्रमिको के औद्योगिक ईकाईयों में कुछ न कुछ कार्यक्रम होता रहता है जिनमे धार्मिक उत्सव, समूह भोजन, इनाम वितरण आदि कार्यक्रम मनाया जाता है। ८० प्रतिशत श्रमिको को कल्याणकारी सहायता मिलती है। प्रस्तुत अध्ययन में ५६ प्रतिशत श्रमिको ने कोई न कोई औद्योगिक इकाई से सहायता प्राप्त की है। श्रमिको को सामाजिक, आर्थिक और आरोग्य विषयक सहायता मिलती है। प्रस्तुत अध्ययन में ५२ प्रतिशत श्रमिक को अनिवार्य छुट्टी, कंपनी की विशेष छुट्टी, आकस्मिक छुट्टी जैसी छुट्टीयाँ प्राप्त होती है। ७० प्रतिशत श्रमिक अपने श्रमिक कानून से परिचित है। इससे उनकाविशेष छुट्टी शोषण दूर होता है, आर्थिक सुरक्षा में सहायक होती है व कर्मचारियो को योग्य काम दिलाने में मदद प्रदान करते है। प्रस्तुत उद्योग में श्रमिक और मालिक के बीच ७६ प्रतिशत संबंध अच्छा है। ८० प्रतिशत श्रमिक के सामाजिक प्रसंग में उपस्थित रहते है। औद्योगिक इकाई में कर्मचारियो को सुपरवाइजर के साथ, मैनेजर के साथ और मालिक के साथ संबंध रहता है। श्रमिको का संबंध अपने कार्य से सीमित रहता और अपनी फर्ज पूर्ण करने के लिए संबंध बनाये रखते है। श्रमिको का अन्य श्रमिको के साथ जो सम्बन्ध है इनमे सिर्फ काम के लिए, पारिवारिक और आर्थिक स्थिति में सहायक रूप बनने तक का संबंध बनाये रहते है। प्रस्तुत औद्योगिक अध्ययन में ४४ प्रतिशत श्रमिको मे संघर्ष होता है। ये संघर्ष श्रमिक, सुपरवाईजर, मैनेजर और मालिक के बीच होता है। श्रमिक का संघर्ष आर्थिक स्थिति बदलने के लिए, काम की स्थिति में बदलाव लाने के लिए और काम में जो आपत्ति उत्पन होती है, उनके लिए संघर्ष होते है।

निष्कर्ष

सामाजिक विज्ञानों में जो अध्ययन होता है इसका महत्वपूर्ण योगदान रहता है। प्रस्तुत अध्ययन में औद्योगिक श्रमिको का उद्योग में जो सामाजिक सम्बन्ध और संघर्ष है उनके बारे में अध्ययन किया है। इस अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि पुरुष श्रमिक ज्यादा काम करते है। इस बात से स्पष्ट होता है की औद्योगिक इकाई में श्रम भारी होता है जो स्त्री के बस में नहीं। परम्परागत भारतीय समाज में देखने को मिलती लैगिक भिन्नता यहाँ स्पष्ट होती है। प्रस्तुत अध्ययन में देखा जाता है की बहुत कम मजदूरो का शोषण होता है और ये शोषण सब से ज्यादा कंट्राक्टर द्वारा होता है। उद्योग की असर श्रमिको के स्वास्थ्य पर पड़ता है। प्रस्तुत अध्ययन में श्रमिको को आर्थिक वेतन अच्छा मिलता है फिर भी उनकी आर्थिक स्थिति सक्षम नहीं होती है। औद्योगिक इकाई में श्रमिको के अनौपचारिक संबंधो की मात्रा अधिक है जिसमे धार्मिक उत्सव, समूह भोजन और इनाम वितरण जैसे कार्यक्रम होते है। औद्योगिक इकाई में कार्य करते मजदुर श्रमिक संघ के सिर्फ सदस्य बने रहते है क्योकि उनका मानना है की श्रमिक संघ में पद प्राप्त करने से मालिक और मेनेजमेंट के बीच संघर्ष होता है। प्रस्तुत अध्ययन में श्रमिको का जो औद्योगिक इकाई में संबंध हैं उसका प्रभाव उनके परिवारों पर सकारात्मक रूप से देखने को मिलता है।

सन्दर्भ सूची

१. शाह ए.जी. एंड दवे जे.के., *औद्योगिक समाजशास्त्र,* अनडा प्रकाशन, अहमदाबाद– २००४–०५.
२. शाह ए.जी. एंड दवे जे.के., *सामाजिक संशोधन की पद्धति,* अनडा प्रकाशन, अहमदाबाद– २००८–०६.
३. जोशी महेश, *औद्योगिक समाजशास्त्र,* क्रिएटिव प्रकाशन, अमदावाद– २००८.
४. नाथ जय प्रकाश, *श्रम समस्या एवं समाज कल्याण,* आर. पी. सक्सेना एंड कंपनी, १६६६.
५. शर्मा राजेन्द्र कुमार, *औद्योगिक समाजशास्त्र,* निशांत पब्लिकेशन– २०००.

****